दाम कम होने से चीनी मिलों का मन खट्टा

[श्रेया जय | नई दिल्ली]

शुगर इंडस्ट्री के लिए नया साल कोई अच्छी खबर नहीं लाया है। मुश्किल से जूझ रहे इस सेक्टर को सरकार की ओर से मदद मिलने के बावजूद चीनी के दाम अभी भी गिर रहे हैं। ये केवल एक साल में 30 फीसदी तक नीचे आ चुके हैं और 5 साल के लो लेवल पर पहुंच गए हैं।

महाराष्ट्र की कोल्हापुर मंडी में अभी इसकी कीमत 23-24 रुपये प्रति किलोग्राम और उत्तर प्रदेश में 27-28 रुपये किलो है। नेशनल फेडरेशन फॉर कोऑपरेटिव शुगर फैक्टरीज (एनएफसीएसएफ) के मैनेजिंग डायरेक्टर एम जी जोशी ने कहा, 'सरकार ने शुगर सेक्टर के लिए इंटरेस्ट सबवेंशन स्कीम की घोषणा की है, लेकिन इससे केवल गन्ने की बकाया रकम का कुछ हिस्सा चुकाने में मदद मिली है। इंडस्ट्री को कैश की जरूरत है। इस वजह से यह किसी भी कीमत पर बल्क में चीनी बेच रही है।'

महाराष्ट्र की कोल्हापुर मंडी में अभी इसकी कीमत 23-24 रुपये किलो और उत्तर प्रदेश में 27-28 रुपये किलो है

किसानों को गन्ने की बकाया रकम लगातार बढ़ने से सरकार ने हाल ही में शुगर इंडस्ट्री के लिए बेलआउट पैकेज की घोषणा की थी। प्रधानमंत्री की ओर से नियुक्त किए गए इनफॉर्मल ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स की सिफारिश पर 6,600 करोड़ रुपये के लोन पर 12 फीसदी इंटरेस्ट सब्सिडी गन्ने की बकाया रकम चुकाने के लिए दी गई है। इंडस्ट्री जानकारों ने बताया कि जब तक एक्सपोर्ट नहीं बढ़ता, चीनी की कीमतों में कोई बदलाव नहीं होगा। जोशी ने कहा, 'चीनी मिलें सरकार की ओर से रॉ शुगर के एक्सपोर्ट के लिए रिलीफ पर तस्वीर साफ होने का इंतजार कर रही हैं।'

एग्रीकल्चर मिनिस्टर शरद पवार की अध्यक्षता वाले मिनिस्टर्स के ग्रुप ने 40 लाख टन रॉ शुगर के एक्सपोर्ट के लिए इंसेटिव को मंजूरी दी थी। हालांकि, इसके लिए सब्सिडी की रकम पर इंडस्ट्री और सरकार के बीच मतभेद हैं। सरकार ने एक्सपोर्ट के लिए रॉ शुगर पर 2,400 रुपये प्रति टन के इंसेटिव का सुझाव दिया है, जबकि इंडस्ट्री इसके लिए 3,500 रुपये प्रति टन की मांग कर रही है।

The Economic Times
28-1-14